इंदर सभा मये तसवीर ॥

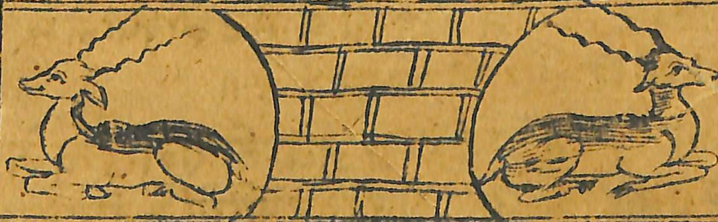

मतबै फ़ैज़रसां शहर लखनऊ अक़बर सराय
आगामीर बएहत्माम ज़ामिन अलीखां से छपा

आमद राजा इन्द्र की सभा के बीच ॥

सभा में दोस्तों इन्द्र की आमद है। परी जमालों के अफ़सर की आमद है। खुशी से चह चहे लाज़िम है स्रते बुलबुल। अब इस चमन में गुले तर आमद २ हैं। फ़रोगे हुस्न से आखों को अब करोगे रोशन ज़मी पै मेह सुमुनव्वर की आमद २ है। दोज़ानू बैठो करीने के साथ महिफल में परी के देव की लश्कर की आमद २ है। ज़मी पर आये गी राजा के साथ सब परियां। सितारों की मेह अनवर की आमद है गज़ब का नाच है और गाना है कया मन का। वहिरफितन यह मह पार की आमद २ है। वयां में राजा की आमद का क्या करूं उस्ताद जिगर के जान की दिलबर की आमद २ है ॥

चौबोला अपने हस्ब हाल जवानी राजा इन्द्र के

राजा हूं मैं कौम का इन्द्र मेरा है नाम बिन परियों के दीद के नहीं मुझे आराम ॥ सुन ले मेरे देव रे दिल को नहीं क़रार। जल्दी मेरे वास्ते सभा करो तैयार। नरश बिछाओ जरा मगर जल्दी से इस आन ॥ मुझ को शब भर बैठना महिफल के दरम्यान ॥ मेरा सिंगलदीप में मुलकों २ राज ॥ जो मेरा है चाहना कि जलसा देखूं आज लाओ परियों को अभी जलदी जाकर यहां बारी बारी आन।

हमरी चोरसे दिन सजनी ॥ धड़कति है मेरी छ॰
है तुम्हरे रोष्रा में सौतिन जाके लगति यारे। दर्शन ॰ मुझे दीदे दिखायेगा
हिये मोहि का ॥ लिख के पठादेउ पतियारे ॥ ... ड़केयारसे ...तको

होली जबानी नीलम परी के सभा के बीच

कान्ह को समझावत न कोई ॥ मोरी अंगिया रंग में भिगोई मेरी ...] में पति खोई ॥ टेक ॥ आज सखी हम घर से जाय के भीति की जान को रोई ॥ अबिर गुलाल छुडावन खातिर मुंह असुवन से धोई बदन माटी में मिलोई ॥ कान्ह को समझावै॰ ॥ गरवा लगायो गिराके मोहिं का मुख पकड़ो जबरोई ॥ इज्जत लीनी गारी दीन्ही हमहूं जान को खोई ॥ सखी बिष खाय के सोई ॥ कान्ह को समझा॰ बैठ२ ब्रजके लोगन में कुबरी को बिष बोई ॥ या जो खबर उस्ताद ने पाई ॥ घर हम हाथ से खोई ॥ निकसि कर जोगिन होई ॥ कान्ह

गजल जबानी नीलम परी बीच पुनि सभा के

इश्क़ की खंजर लगाया है दिलपै करी इनदिनों ज़ख्म की सूरत है खून आखों से जारी इनदिनों ॥ बाग़ में जाती है उस गुल की सवारी इनदिनों दम चुराये फिरती है बादे बहारी इनदिनों ॥ देके कस्मे कूच ये क़ातिल मे लेजाती है दिल ॥ दुश्मन अपना कर रहा है दोस्त दारी इन दिनों ॥ भोली२ शक्ल पर दिल तड़फ़ जाता है सनम ॥ क्याही सूरत होगई है प्यारि२ इनदिनों ॥ जुल्फ़ तों हमने निकाला वसल में दिल को बुखार ॥ फुरक़ते दिल्दार से है तप की बारी इनदिनों ॥ इश्क़ के आज़ार ने जार किया है इस क़दर ॥ शक्ल पहिचानी नहीं जाती है मारी ॥ इनदिना ॥ क़तल करता है घरक आलूदह अबरू खल्क़ को क्या तेरी तलवार पर है आबदारी इनदिनों ॥ सर उठाया है जिन्हूं इमला इश्क़ जुल्फ़े यार में ॥ पाउं को दरकार है जंजीर भारी इन दिनों साम लाकर पाउं में आशक़ बुरा करते हैं हाल ॥ छोड़िये अल्लाह पर दे में

...ती सांसे भरते हैं हरदम अमानत किसलिये
।किसपर तुम्हारी इनदिनो ॥ २॥

ग़ज़ल दूसरी जबानी नीलमपरी के सभाकेबीच

मेरा सेर चमन से न हुआ साद कभी। ले गया बाग में भूल मे न से
द कभी। जिंदा जबतक है हम रोजान जफ़ायें करलो। या सहेंगान
तुम्हारी कभी बेदाद कभी॥ तोड़ता बेड़ियां दोहरी न कभी दहशत में
मानता काहे को लोहा मेरा हद्दाद कभी। सर भुका जाता है उठते
ही महिफल से क़दम॥ हाय मुझ पर भी कोई छोड़ दे जल्लाद कभी
सितम ईजाद तुझे हमने बनाया जानी। इस तरह दिल से सितम होते
थे ईजाद कभी॥ तुम वह खुशक़द हो रविश पर जो जरा तन के चलो॥ स
र उठाये न चमन में कोई शम्शाद कभी। नलशाखा लबे गुलरंग से भी
नाय शराब॥ हम से शीशे में न उतारा कभी वह परीजाद। दिल को था
आलम तिफली में ये शौक़ सहिरा। न किया मैने शौक़ गुलस्तां का
याद कभी॥ लेलिया जुल्फ़ का सौदा लबे सीरी की है चाह॥ कभी मजनूं
हूं तेरे इश्क़ में फरहाद कभी। रहते न क़श क़दम हमने गुज़ारी औकात
मिट गये साफ़ कभी होगये बरबाद कभी॥ होगा तब जाल में बुलबु
ल का साना मालूम॥ आयेगा मौत के फंदे जो सैयाद कभी। बुलबुलों कि
को दिखाली हो उरूजे परवाज़। हम भी इस क़ैद में थे कैद से आज़ाद क
है क़यामत बुते बेशर्म हया का बातें। कभी कहता है अमानत मुझे उस्ताद

गजल तीसरी जबानी नीलम परी के ॥

मज़ा विशाले सनम का उठायेगा फिर क्या। डरा जो हिज्र से वह दिल लगा
येगा फिर क्या। किसी की ज़ुल्फ़ की ज़ानिब जो खिंच रहा है दिला कलाय॥
तो जो मेरे दिल पै लगायेगा फिर क्या। बुलायेगा जो मेरी हड्डियां जो तू बे
दाम। पस फसाने गो यार आके खायेगा फिर क्या। इलाही सेर हो फिर॥
जो शमरदा दये तर॥ किसी के इश्क़ का तूफां उठायेगा फिर क्या॥ इल

ही खैर फड़कती है आंख क्यों बाईं। ग़ज़ब से वह मुझे दीदे दिखायेगा फिर क्या जिफ़ा का जान ग़नीमत मिला सितम का कर। बिगड़ के यार से अब दिल बनायेगा फिर। दिखाया ज़ीस्त में जिसने मुंह अमानत को पस विसाल वह तुरबत पर आयेगा फिर क्या ॥

फिकरे लाल परी की दरख्वास्त में जवानी राजा इन्द्र के ॥

दिखा चुकी हैं कर तब सारे। अपि हाल में अब बैठ हमारे॥ किया सभा में तूने नाम। अब है लाल परी का काम॥ लाओ लाल परी को ॥

आमद लाल परी की बीच सभा के आना ॥

सभा में लाल परी की सवारी आती है॥ जमाने रंग अय इंदर की परी आ शफ़क़ में आयेगा झुरमुट सितारों का। पहिन के सुर्ख वह पोशाक भारी आ हसीन जन्म में सादी से खिल पड़ेंगे तमाम। गुलों के वास्ते वादे वहारी आ निगाह उसकी छुरी से सिवा नुकीली है। लगाने सब के दिलों पर कटारी खिलेगी तख़्त लाल का सभा में अप यारी मिहाल हो कि मुराद अ.तु. उपद्दा देखिके बिजली गिरेगी बिजली पर। किनारों पर वह लगा कर कि नारी आती हो मैं किस जबां से कहूं उसको शीरिखयां उस्ताद॥ वहार नाज़ह की महफ़ल में बनी आती है॥

शेर रख्वानी जबानी लाल परी के सभा में

इंसां का काम हुस्न पै मेरे तमाम है। जोड़ा है सुर्ख लाल परी मेरा नाम है याकूत ज़र रुबीर है सरकार का मेरे। नौकर यक़ीक़ लाल बदख्शां गुलाम है। आशक़ को क़तल करती हूं अबरू की तेग़ से दिनरात मुझे खून बहाने से पोशाक मेरी सुर्ख है सुरखड़ा है बादसा। देखो शफ़क़ में रात को माहे तमाम है सारवों से भरी है होते हैं सुर्ख चमन हल लाल हर गुल की ज़ीस्त बाग़ जहां मेंहरी-मिरीख मुझ से होता है हरदम जो दूबदू। करता लहू लगाके शहीदों में नाम है। उस्ताद अंजुमन में रहे सुरख़रू सदा। अल्लाह से दुआयें हैं सुबह शाम है

छंद जबानी लालपरी के सभा में

बैठी थी मैं काफ़ में जोड़ा पहिने लाल। बुलाकर आपने बड़ा दिया इकबाल बड़ा दिया इकबाल कि यहां मुझको बुलवाया। सभा रूका आजु बऊत दिन बारूप सरूप सुभाउ सब मेरे दिल को भया है सदा उस्ताद पै या करतार का ला

ठुमरी जबानी लालपरी के बीच धुनि देश में॥

मेरे जोबन में लाल जड़े बहुत खरे। ओ महाराजे रे। कोऊ मूंगा कोऊ चुन्नी कहते हैं परखन वाले परगाज़ परे। बहुत खरा छतियां मोरी ग़ज़ब का खुशरंग जैसे आगया मैं काल धरे॥ बहुत खरे॥ कोऊ मेरे लाला लाल धोना कोउ स्ताद से जाकर खबर करे॥ बहुत खरे ओर महाराजा मेरे जोबन॥

सावन जबानी लालपरी के सावन की फ़सल में

बिनपिया घटा नहिं भावे। रह २ दिलऊ धो आवे बिजली की तड़पा बिन पिया०॥ अंतरा

ऋतु बर्षा की आई रे गुइयां आज पिया को काल नहिं आवै। मोरी ओर सया दिन सजनी कोऊ वाको मनभावे न पिया॥ कासे कहूं यह मेह बूंद में। लिख पतियां जो पठावे॥ पति म को केऊ मरा बर्षा में दई मा मा मिलावे॥ बिनपिया०॥ उमड़ि घुमड़ि वो काली बदरिया मोई नाहक प्रान सतावे कोउ पवन पुरवाइया सेजा कहे औ रसुलक बर सावे बिनपिया भीजन हूं असुवन के बूंदन मेहा फ़रन लगावे। पी उस्ताद

न के अपने पन पर्वत पर जावे। बिन पिया घटा नहिं भावे

गज़ल सावन की जवानी लालपरी के सावन की फसल में॥

दिल को मरग़ूब है ठंढी जो हवा सावन की। मांगता हूं मैं सदा हक़ से दुवा सावन की। याद आता है वह सब्ज़ा वह घटा सावन की। फिर दिखला या फिर अब्र जलद ख़ुदा सावन की। चढ़ गयी जबकि फ़लक पर मेरे आ गिर गई खलक़ की नज़रों से घटा सावन की॥ दरिया आंखों से किस २ का बरसता ले॥ यार हाथों में लगाता है हिना सावन की। ज़ुल्फ़ आ कारी यों है ड्यपट्टा ऊंदा॥ शबे तारीक में जिस तरह घटा सावन की एक लहिजा नहीं थमती है घड़ा अश्कों की लग गई क्यो मेरी आंखों की घटा सावन की। अब भारी हुवा जाता है खुदा खैर करै॥ आज बदली नज़र आती है घटा सावन की। क्यों दमें गिरिय तसव्वर न मुझे ज़ुल्फ़ का है॥ अरात होती है सियाही में बला सावन की॥ मोती का कुछ नाम नहीं यार के ज़ुल्फ़ों के क़रीब। झीलैं भादों की वह हैं और ये घटा सावन की॥ अय अमानत ये ज़मी तूने निकाली है नई। पहले थी किसकी ग़ज़ल तेरे सिवा सावन की॥

होली जवानी लालपरी के बीधनिसिंधु में

लाज रखलो स्याम हमारी। मैं चेरी हूं तिहारी ज़रा दे समझ कर गारी अबिरा गुलाल न मुह पै डालो न मारो। पिचकारी॥ आधी देह सब देख परेगी॥ सारी भिजोवन सारी। कहेंगे लोग मतवारी॥ हम चातुर होली के लिखाया हम उत्पांक अनारी॥ लाल झांक लगावत मोहन जाउ तोऐ बलिहारी। न कर मोंहि जान से आरी॥ लाख कही तुम एक न मानी बिनती कर मैं हारी॥ याही घड़ी उस्ताद से जाकर कहिहौं

गजल ज़वानी लालपरी के बीच धुनिसिंधु के

ख्याल आता है दिल को शिकवये बेदाद क्या कीजे। खुदा से ऐ बुते का

तेरी फिरयाद क्या कीजे॥ बहार आई है गुलशन में घुटा जाता है दम मे अपना॥ क़फ़स के दर को वां करता नहीं सय्याद क्यों कीजे। अब सरकता है दहन से खयाले यार का सिकवा॥ जो भूले आप को ये दिल उसे फिरयाद क्या कीजे। मुकाबिल वसब को पाकर गुलिस्तां में यह गुल बोला॥ गुलाम अपना जो हो दिल से उसे आज़ाद क्या कीजे॥ किसी महबूब का बूटा साकद आंखों में फिरता है॥ चमन में दाब कर ऐ दिल मुझे शमशाद क्या कीजे। जिन्नू का जोश खाता है रगों को छुके नस्तर से॥ न मुझ को गालियां दीजे तो ऐ सैय्याद क्या कीजे। लुत्फ़ बहना है गैरों का हमारा दम निकलता है। गले पर फेरता खंजर नहीं जल्लाद क्या कीजे॥ हमारी कबर को ठोकर लगा कर यार कहता है। मिला हो खाक में जो खुद उसे बरबाद क्या कीजे॥ अमानत को हर पर पहुंचा तो यों फरहाद चिल्लाया॥ लबों पर जान शीरी है चले ऐ उस्ताद क्या

गज़ल दूसरी जवानी लाल परी के

शबे फुरकत में नालों ने उड़ाया सिर पर उठाया है। ज़मी का जल जता है आसमां चक्कर में आया है॥ रुखे रंगी को हंस कर ज़ुल्फ़ ने उसको छिपाता है सब में बिजली चमन में अब्र छाया है। छिपाऊं मुंह नदामत से लहद में क्यों न मैं वहिसी॥ कफन ने दाग़ अरयानी के जामे को लगाया। हिसाबे आबो दाना में होगा तो कह दूंगा। पिया है उम्र भर खूने जिगर ग़म में न खाया है॥ नई है रोशनी अपनी लहद पर तंग दस्ती में॥ चिराग़ों के एवज़ हर ग़म अरू ने दिल लगाया है॥ ढये हो तेज हमपर संग दिल तुम गालियां देकर॥ ज़बां की तेग़ को खूब आपने पत्थर चटाया है॥ शफ़क़ फूली है। देखो शाम को शहर बदनसीबों में॥ लबे रंगी पै मिस्सी मल के उसने पान खाया है। हमें अब ज़िंदगी है तड़क इनकी कड़वी बातों बातों से। किसी दिन ज़हर खा लीजे यही दिल में समाया है॥ मेरी तुरबत पै ताना चांदनी में क्यों है समगीरी

यह किसने चादरे महिताब में धब्बा लगाया है॥ क्यों सिंदूर का टीका नहिं महिराब अबरू में॥ चिरागे उस शाम आरू ने ऐन काबे में जलाया है॥ नहीं बेवजह पै हम हिचकियां आती हैं फुरकत में॥ किसी महबूब को तू अय अमानत याद आया है॥

फिकरे सब्ज़ परी की दरख्वास्त जवानी इंदर के

काठी राज सारी मज़े में। बैठ मेरे पहिलू में प्यारी। वक़्त लड़ाई दंगे जाना अब है सब्ज़ परी का ध्यान॥ लाओ सब्ज़ परी को॥

आमद सब्ज़ परी की बीच सभा के

आती है सब्ज़ परी नये अंदाज़ से। लब सुर्ख है पर सब्ज़ है पोशाक हरी है॥ फीरोज़ा उसे देख के रंगा जाता है हीरा। चिहरे में जमरुद से सिवा जलवा गरी है॥ जिन उससे खिजालत के सबब उड़ नहीं सके॥ परियों की सदा शर्म से वे बोलों परी है। ज़ेवर की है क्या शान छा हर से बदन है॥ इक मारवहै नाज़ुक कि सियूफे से भरी है॥ होता है जमरुद में सदा धानी दुपट्टा। क्या हुस्न के इक़बाल से सब्ज़े के चरी है। आमद की ख़बर सुन के हसीनों में नहीं दम॥ जो समा है महिफिल में बरागे से हरी है॥ उस्ताद अजब आस को माशूकों के है नाम॥ शाहज़ादे वह गुलफ़ाम है वह सब्ज़ परी है॥

शाहज़ादी अपनी हुस्न हूला जवानी सब्ज़ परी के
मामूर हूँ शोखी से पारा रन से भरी हूँ। धानी मेरी पोशाक है मैं सब्ज़ परी हूँ॥

क्या अक्स है सबजे की मैं उस्ल के आगे। फ़ीरोज़े से ख़ुश रंग ज़मुर्रद से खरी हूं। लेलेती हूं दिल आंख फिरस्ते से मिलाकर। इन्सा है बलाक्या मैं नहिं जिन से डरी हूं। शोला है भभूका है गज़ब है मेरा ग़ुस्सा॥ ज़ लज़ावे परीज़ाद जो मैं गरम जरी हूं॥ जिंदा न रखेगा मुझे सुन लेवे जो राजा॥ शाहज़ादे ये गुलफ़ाम की सूरत पर मरी हूं॥ वह समां में परवान हूं यह सर्व में कुमरी। वह गुल है जहां में मैं नसीमे सेहरी हूं॥ उस्ताद के दम से चमने हुस्न है आबाद॥ मैं वास्ते ताऊसके दाग़ जिगरी है॥

चौबोला ज़बानी लज़ परी के

राजाजी तो सो गये दिया न कछु इनाम। जाती हूं में बाग़ में यहां मेरा काम॥ सुनरे कालदेव रे तू मेरी बात। आती थी में राजा के घर आज की रात॥ शाहज़ादा इक बाम पर सोता था नादान॥ जोबन उसका देखकर निकली मेरी जान। उतरी अपने तख्त से तीर कलेजे खाय सोता था वह बेखबर हाथ पांव फहलाय॥ सूरत उसकी देखकर दिल से गया करार॥ मुह पर मुंह मैंने रख किया ख़ूब सा प्यार॥ दिल मेरा लगता नहीं महिफिल के दरम्यान। कालिब मेरा है यहां वहां है मेरी जान॥ उसकी यार सूला उहा जाकर जल्दी यार। लौंडी तेरी होऊंगी तेरी ताबेदार॥

जवाब कालेदेव का तरफ सब्ज़परी के

घर राजा के तू है परियों का सरदार। तुझ से करसक्ता नहीं हरगिज़ मैं इ नकार तेरी खातिर है मुझे सब यहां। सया पला वता माशूक का लाउं अ भी उठाइ।

जवाब सब्ज़परी का तरफ़ कालेदेव के

जाना संगलदीप में अख़्तर नगर मह्ल साता है एक माहरू लालमह ल में वहां छल्लामें दे आई हूं अपना उसे निसाना सब्ज़ नगो की आवसेत उसको पहिचान॥ सवाल कालेदेव का सब्ज़परी से लाया शाहज़ादे को मैं जाकर हिन्दुस्तान। तू अपने माशूक को सब्ज़परी प हिचान॥ जवाब सब्ज़परी का खुश हो कर तरफ कालेदेव के यही है शाहजादा मेरा यह है मेरी जान। यही मेरा दिलदार है मैं इस्पर कु रबान॥ जाना सब्ज़परी को शाहज़ादे का शाना हिला कर॥ सोते हो क्या बेखबर छोड़ कर तुम घरबार। आंखें खोलो लाड़िले नींद से होशियार॥ जागना शाहज़ादे का नींद से और कहना घबराके कोठा मेरा क्या हुआ छूटा किधर मकान सोता था मैं किस जगह आया हो य कहा॥ न वह मेरे लोग हैं न वह मेरी आन। ख्वाब यह मैं देखता जान रहा हूं यहां॥ गाना शाहजादे का गज़ल आलम हैरत में बेताब होकर॥

घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको। किस सितमगर ने सोते से ज गाया मुझको। हक़ ने ख्वाब परे साफ दिखाया मुझको। नज़र आता है न मुझको पराया॥ हैफ़ सद हैफ़ किसी ने न खबर ली मेरी॥ क्या अज़ी ज़ों ने। मेरे दिल को भुलाया मुझको॥ नींद से आंख किसी की न की ठ पर खुला॥ उन के न सूजी के चंगुल से छुड़ाया मुझको॥ बस जोस आलिम के मुझे छोड़ा व का हाय गज़ब॥ इस बे कोई परिसत ने यों काया मुझको॥ बाद में सुनो अब उमीद रहाई की नहीं॥ किस मैं मेरे अल्लाह फमाया ममा को। मुआलखी की कोई तदबीर बता

वो उस्ताद ।। है बहुत गिरदिशे किस्मत ने सताया मुझको ।।
फिर गाना शाहज़ादे का बिहाग की चीज हालत इजतरार ।।

मुझे कौन घर से लाया यहां ।। बतावो यह किसका हैगा मकान ।। मुझे कौन घर से लाया यहां । सब बिछुड़े कोई संग न साथी । अज़ीज़ों को अपने पाऊं कहां ।। मुझे कौन० ।। दिल का किसको हाल सुनाऊं सिर पर बापन मां । मुझे कौन ।। फस गये हम ज़ालिम के फन्दे ।। कोई उस्ताद से कहियो वहां । मुझे कौन घर से लाया यहां ४ ।।

कहना सब्ज़ परी का शाहज़ादे का हाथ थाम कर

मस्ती तुम मेरी तरफ घर का लो मत नाम ।। लौंडी मुझको जान कर करो यहां आराम ।। जो होना था सो हुआ जानेदे सब खैर ।। चलो फिरो खावो पियो करो बाग़ की सैर । बतलावो अब हस्ब सब अरु तुम अपना नाम ।। रहते हो किस देश में हैगा कहां मकान ।।

जवाब शाहज़ादे का

खिलवत में रहता हूं ऐश है मेरा काम । शाहज़ादा हूं हिंद का नाम मेरा गुल्फाम ।।

सवाल शाहजादे का सब्ज़ परी से ।।

हे औरत किस क़ौम की अपना नाम बता । दोनों शानों पर तेरे है यह क्या ।।

जवाब सब्ज़ परी का ।।

क़ौम की हूं मैं परी सब्ज़ रूत है नाम । ये दोनों पर हैं अय श

रहता हूं मैं काफ़ में सब्ज़ परी है नाम। राजा इंदर के यहां नाच मेरा है काम

सवाल शाहज़ादे का ॥

जलदीये बतला मुझे दिल को है बिस्वास। मेरा आना किस तरह हुआ है तेरे पास॥ जवाब सब्ज़ परी का ॥

तुझ पर मैं आशिक़ हुई चलते राह। उठा मगाया तुझे यहां भेजके देव

और रवानो जवानी सब्ज़ परी के मुखा लिख हूँ कर शाहज़ादे पे

सिरपे आखो के कलेजे पाव ठाऊ तुझको। आ मेरी जान गले से मैं लगाऊं दिलोजान से भाती हैं अदायें तेरी। पास ला चांद सी मुहं लूं मैं बलायें तेरी लेट पहिलू में तेरे घर को मैं आबाद करूं। तुझको। लपटा के गले बस्ल से दिल साद करूं॥ जवाब शाहज़ादे का

बस्ल में तेरी कसम घर में है खाना मुझे। न खबरदार अभी हाथ लगाना मुझको नादान समझ दूर हो दाना हूं मैं क़ौम का तू जो परी है तो स्याना हूं मैं बेसवा तुझसी ज़माने में न होगी जिनहार। आब बदनाम हुई मुझसे छुड़ाया घर बार॥ जवाब सब्ज़ परी का

जिंदगी का है मज़ा ऐसी मुलाकातों में। चोचले मुझ से बघारो न चलो बा सुकर अल्लाह का गर लड गई क़िस्मत तेरी इक व एक मुझ से परी की हुई जलफत तेरी॥ तुझको दिवाने ज़रा शर्म आती है। ख्वाब में भी कभी इंदर की परी आती है॥ देख पछितायगा मेरा जो बुरा दिल होगा॥ वस्ल तुझको न परी का हासिल होगा॥

जवाब शाहज़ादे का

घर को छूटने का है गम आहो फगां करता हूं। वस्ल का वादा इस शर्त से हां करता हूं॥ सुनी इंदर की सभा मैंने कहानी में है उसका अरमान मुझे जोस जवानी में है। और जलसों का तो है। हिंद में चर्चा भी है। नाम परियों का मगर मैंने नहीं देखा है। साथ ले चल के मुझे वह जलसा दिख

ता ॥ राजा इंदर के अखाड़े का जलसा दिखला सैर में तेरे मतबब वहां का एक बार करूं । जीते जी फिर न कभी वस्ल से इनकार करूं ॥ उमर भर पास से तेरे न कहीं जाऊं मैं ॥ जो कहे तू आंखों से बजा लाऊं मैं ॥

जवाब सब्ज़ परी का ॥

ऐसी बातों का ज़बां पर न ही लाना अच्छा जान आफत में नहीं मुभ को डालना अच्छा ॥ देखना इंदर के अखाड़े के सब सजान है तू ॥ सब्ज़ देख अक्ल है दीवान है नादान है तू ॥ इसी जा सर का इंसान नहीं चलते हैं ॥ वा मेरी जान परीज़ाद के पर जलते हैं ॥ आफत आ जायगी तुभ पर खरे एक आन के बीच ॥ आदमीज़ाद का क्या काम परीज़ाद के बीच ॥ कोई एजा की खबर जाके लगा देवेगा ॥ फूंक देगा वह तुझे मुझे को जला देवे न जलायेगा तो आफत में फसावेगा मुझे ॥ कैद करके वह कुआं में खूब भकायेगा तुझे ॥

जवाब शाहज़ादे का ॥

मैं न मानूंगा न मानूंगा कभी बात तेरी ॥ काम किस रोज़ कि आवैगी मुलाकात तेरी ॥ बात जो असल थी मैं अक्ल से पहिचान गया ॥ वाह सइनकार के मेरी जान दिल मान गया ॥ तू किसी देव की ख़िदमत में वहां जाती है ॥ इसलिये मुझको सभा में नहीं लेजाती है ॥

जवाब सब्ज़ परी का ॥

बात हरगिज़ न ज़बां से न निकालो साहब ॥ होश में आवो ज़रा मुंह को सभालो साहब ॥ देव से मुझ को जो बुरा काम करना होता ॥ आमदनीज़ाद पै किस वास्ते मरना होता ॥ मैं परी होके और ऐसे मैं फिदा आनका रोटी बोटी पै मुये देव को कुरबान करूं ॥

जवाब शाहज़ादे का ॥

दिल हर आन का फंदे में फसाता हूं तो ॥ अय परी क्यों मुझे बातों में उड़ाती हूं तो ॥ सुबह होती है मेरी जान कोई आन के बीच ॥ मैं खबी वस्ल के सुना मुझको परिस्तान के बीच ॥ वहां न ले जायेगा तो जी से गुज़र जाऊंगा ॥

आपमें अपना गला काट के मर जाऊंगा॥

जवाब सब्ज़ परी का॥

मुझ़ को यार रख राव अपना जवानी तने। हाय अफ़सोस मेरी बात न मानी तन अरक गये हाट कहां तक अरे समझाऊं मैं। चल अखवाड़ा तुम्हे इंदर का पक गये हाह कहां तक अरे समझाऊं मैं। चल अखवाड़ा तुम्हे इंदर का दिखा लाऊं मैं॥

जवाब शाहज़ादे का

किस्तर ह चलने पै तैयार मेरी जान हूं मैं॥ तू परीज़ाद है चालाक और इंसान हूं॥ उड़ के तू जायगी मक पल में परिस्तान के बीच। हाथ फैला के मैं रह जा तन आसमान के बीच॥ कोई उड़ चल के तदबीर बता दे मुझको पर कस दर के तू नाच के लाके मुझको॥

जवाब सब्ज़ परी का

वह का बात न करो हाथ में आवो जानी। न परीज़ाद से बेपर की उड़ावो जानी। पाम लौ पाया मेरे तख़्त का हाथ से तुम। छूटे जाना नहीं कहीं॥ राह में पराम पै तुम। मुझसे वहां जो के कोई बात न कहना साहब पाह तुन मरन साथ नेहना साहब॥ गाके अरु नाच के बुत स को कमार लूंगी मैं। तुम्ह को लेचल के दरखतों में छिपाऊंगी मैं॥ किसी आफ़त में तू फंस अगए आना जानी। बाद रखना कि मुझे भूल न जाना जानी॥

आना रूबारा सभा में सब्ज़ परी और कहना छन्द का

सभा में कुन्वो का सुरूपा आप किया आराम। आई हूं मैं फिर यहां करने पना कामा कास अपना काम वहां मैं फिर हूं आई॥ ठुमरी छंद ग़ज़ल में जो मैं धुन है समाई। तान बंधेगी आज जो दिल में खोल के गाऊं कहूं मैं वह दस्तादने बना चीज़ बनाई॥

गाना जवानी सब्ज़ परी के बीच धुनि परज के

मेरी आंखें फरकन लागी। कहां गयो यार किधर गई सखियां अंखियां फरकन लागी देह फुकत है जिय डरपत है। मीत तवा के सजा के

खियां।। अंखिया फरकन लागी।। नैनन में दिलदार बसंत है। ये अंखियां अलमास परिखियां।। अंखियां।। बलि बलि जाऊं उस्ताद के आगे बीच सभा में मोरी पति रखियां।। अंखियां फरकन लागी।।

ठुमरी दूसरी जवानी सब्ज़ परी के बीच धुनि पर्ज के ।।

सुधि लाग रही मोरी आठ पहर। तन मन की नाहिं मोहि खौफ खबर सुधि लाग रही मोहिं०।। निशि बासर मोहिं काल न परत है दिखला० वे भालक मोहिं एक नज़र। सुधि लाग रही०।। अरज करत मोरी जियरा डरत है।। दिल धड़कत देह कंपत थरथर।। सुधि लाग रही।। हरका पता उस्ताद लगावो।। बौरी सी फिरती हूं जिधर तिधर।। सुधि ला०

गज़ल जवानी सब्ज़ परी के बीच धुनि देश के ।।

भूला हूं मैं आलम इसे सरसार कहते हैं। मस्ती से नहीं गाफिल उसे हुशियार कहते हैं। दम लेके मेरा छोड़ा आज़ार इसे कहते हैं। अच्छा न रहा एक दिन बीमार इसे कहते हैं। कंत घर से जो वह निकला एक हस्स हुबा बरपा।। दिल पिस गये आलम के रफ़्तार इसे कहते हैं बातार इसे कहते हैं। तसवीर को सक्ता है कहते हैं इसे नक़्शा। आईने को हैरत है रुखसार इसे कहते हैं।। इस रिश्तये उलफत में गर्दन है हज़ारों की तसबीर।। इसे कहते हैं। जिन्नार इसे कहते हैं।। महिशर की बेबों दांदा या शाह न बिरवाई।। इकरार इसे कहते हैं इनकार इसे कहते हैं दिल में शबे फुरकत में क्या साथ दिया मेरा।। मुअन्निस इसे कहते हैं गमख्वार इसे कहते हैं।। शबे गुज़रा शहर आई बक २ के थका आशिक़ उसने बोसा न दिया तकरार इसे कहते हैं आमोश अमानत है कुछ उपमा नहीं कराता।। क्या २ नहीं ऐ प्यारे अंगियारे इसे कहते हैं।।

गज़ल जवानी सब्ज़ परी के

लबे ना बाबस की उलफत में तड़पा जान आई है।। मरीजे इश्क मर

ताहै मसीहा की दुहाई है॥ नहीं आरवोंकी अफ़सां उसके मुखपर लटके आई है॥ जबी ने सरवबे दीदार पर छिडकी हवाई है। शबे तारीक फुरकत में करें को॥ अपना रोशन चिराग़ अंधा है चरबी समां की आरवाम छाई है॥ दफ़्रे सतसे है मदरगा जिल्द मसहफ़े हारिज़। कलाए मुल्लाह की काफिर ने क्या सूरत बनाई है॥ जगह फज़्ले खुदा से इक बुते काफिर के है दिलमें। फिरस्ता जान ही मक्का जहां अपनी रसाई॥ है हिलाता है फलक की बाद मुरदन अपने नलों से॥ लहद में पांउ फैला कर ज़मीं सर पर उठाई है॥ खुदा के सामने गरदन न उठाय न मुकाये गा न दामन से॥ बुतों को करके सिजदा क्यन न मुरव को खाई है॥ न पहुंचा आपको साअद छुडा कर पास गैरों के। कलाई हाथ में लाकर मेरे दिल को कल आई है॥ मेरी तुरबत के सज्रे पर गुमा भेजा है सबनम को॥ लहद पर मोतियों की चरव ने चादर चढ़ाई है॥ रख अल्लाह इज्जत इश्क़ में कुछ बन नहीं पडता॥ अकेला हूं मैं उस बुत की तरफ सारी खुदाई है॥ लिया है अबरू ये कातिल की बोसा ऐन गुस्से में। जिगर देखो हमारा मुंह पे क्या तलवार खाई है॥ जिलाना आतिशे अफरोजो का मुशकिल है दुनियां में॥ मेरे नालों ने अफ़सर आग दोज़ख़ में लगाई है। मुकर्रर बोसा लेने से मज़ा मिलता है दुनिया में॥ लबे शीरीं में जाना गोया कंद की मिठाई है। रुखे रंगी के बोसे गैर की ग़ीबत में लेता हूं उड़ा है बाग से सैय्याद बुलबुल की यान आई है॥ फसा है इश्क़ के फन्दे में बेढब लान अमानत की। मदद को या अली पहुंचे दमे मुशकिल कुशाई है॥

चुगली खा खाना लाल देव का राजा इंदर से मसनवी में॥ महाराजा को हक़ रखे शाद काम नई आज है अर्ज करता गुलाम खाता था इस दम चमन की हवा॥ हक़ीक़त वह देखी कि होश उड़ गया॥ शजर है पुराना जो शाम शाद का॥ गुज़रा है वां आदमी ज़ाद

जाद का ॥ नहीं काम इस ला अक़ल मेरी कान॥ वह इन्सान है या कि
माहे तमाम ॥ उसे कौन लाया है यहां अपने साथ॥ इसी फ़िक्र में कफ़
से मलता हूं हाथ॥

कहना सब्ज़परी का लालदेव से आलम पातनं

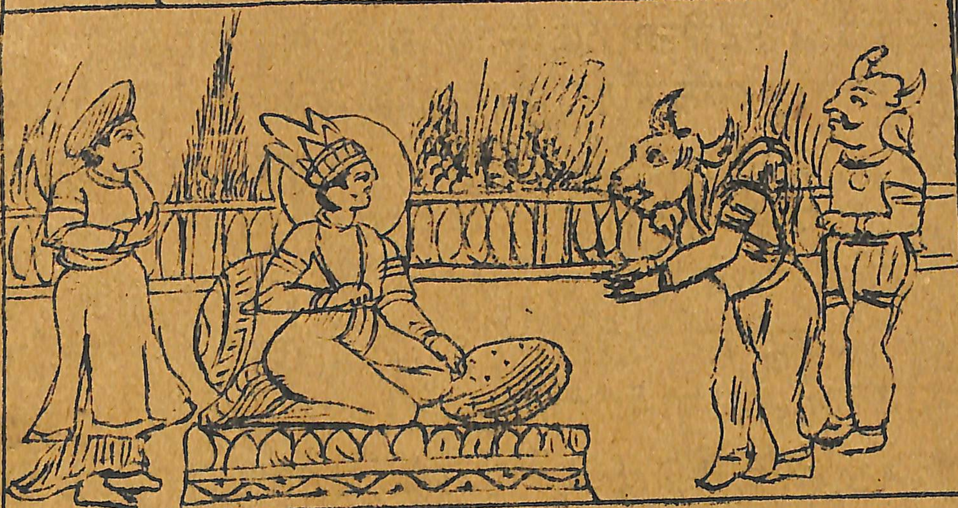

न कर लाल देव इस तरह का कलाम और बेमुरव्वत ज़बां अपनी पा
खुदा के ग़ज़ब से ज़रा दिल में कांप। चुग़ुलख़ोर के मुंह को उसने है सां॥
परी की तरफ़ देख अहिय के न बनावुराई से बाज़ आवकोले हसन
किसी की बदी लून का ऐब है। कि उसका खुदा आलिमउलगैब है॥
दिल आशिक़ इस बात से। है लेगया। मुझे हाय काम बदूवत क्या मिलग

पूछना राजा इंदर का लालदेव से ग़ज़ब नाक होकर

ओ देव है तू यह क्या बक रहा। मेरे बाग़ में कौम इन्सां का क्या क़दम
हुवा किस तरह यहां बसर का गुज़र। परिंदों की दहशत से जलते हैं पर
क़दम रख सके जिन की क्या जान है फ़िरिश्तों का यहां अक़्ल हैरान है
किसी देव से आशनाई है॥ परी कोई साथ इसको लाई न हो उ सा
खींच ला पास मेरे सिताब। कि गुस्से से हूं हाल मेरा ख़राब ॥

जाना लालदेव का पास गुल्फाम के और पूछना तैफ़्रा रवा कर

बसर है कि जिन है कि साया तू ॥ परिस्तान में क्योंकर आया है तू ॥
उठा आरव कर जल्द मुझ से बयां ॥ बिठाया तुझे किसने लाकर यहां ॥
चमन का कोई गुल कि बूटा है तू ॥ सितारा बया बन कि टूटा है तू ॥
परी पर ये शैदा तेरा दिल हुवा ॥ अरवाडे में इन्द्र के दाखिल हुवा ॥
मेरे साथ चल जल्द ये बशऊर ॥ बुलाया है राजा ने अपने हुज़ूर ॥

लाना लालदेव को गुल्फाम को खींचकर रोबरू राजा इंदर के और अर्ज़ करना

हुज़ूरी में हाज़िर है ये शैल रवूं ॥ महाराज साहब निगाह रोबरू ॥
बजा आपका हुक्म लाया गुलाम ॥ चमन में पहुंचकर किया अपना काम
शजर के तले से उठाया इसे ॥ सभा की तरफ खींच लाया उसे ॥
डरा मैं न कुछ उसकी फरयाद से ॥ उठा लाया कुमरी को शमशाद से
हुकुम कीजिये जो सज़ावार है ॥ खड़ा दस्त बस्ता गुनहगार है ॥

पूछना राजा इंदर का गुल्फाम से सबब दाखिल होने का परिस्तान में ॥

अो कौन है तेरा है गा क्या नाम ॥ सभा तूने की मेरी बरहम तमाम
तुझे लाया यहां कौन ये बदसफ़ात । बयां मुझ से कर जल्द ये वारदात
किया क़सद तूने परिस्तान का ॥ न खौफ़ आया तुझे अपनी जान का
मेरी सारी महिफिल की ली आबरू ॥ यहां घोरने आया परियों को तू
बता हाल अपने का ये दर्द नाक ॥ जलाकर अभी वरना कर दूंगा खाक

अर्ज़ करना गुल्फाम का राजा इंदर से आलम हिरास में हाथ जोड़ कर

कहां क्या फलक का सताया हूं मैं ॥ यहां खेल कर जी पै आया हूं मैं
परी सब्ज़ है जो अरवाड़े में यहां ॥ उसी का हूं दीवाना मैं नाम जो

सभा की सदा धूम सुनता था मैं। इसी फ़िक्र में सिर को धुनता था मैं।
यह आने लगी आज को ख़ाब जोयां। लटके कर ज़ुदा तख़्त में मैं रवां॥
बला में हुवा यहां गिरफ़्तार हूं॥ जो चाहे सज़ा दो गुनहगार हूं॥

बुलाना राजा इंदर का शब्ज़ परी को सामने अपने। और लानत मलानत करना॥

अरी ओ परी शब्ज़ आदेहया॥ मेरे सामने आ जल्द बेसवा॥
मुड़ी है तेरी ज़ात बुनियाद पर॥ कि आशिक हुई आदमीज़ाद पर
बनाया अरी तूने इंसा को यार॥ वकीले हसन सुन तू ऐ नाबकार
तेरा रंग गैरत से उड़ता नहीं॥ तुझे क्या परीज़ाद जुड़ता नहीं
सभा में लगा लाई इंसा का साथ। तेरा अब गरेबा है औ मेरा हाथ॥

अर्ज़ करना सब्ज़ परी का राजा इंदर से और नादिम करना गुल्फाम को और रोना गले लिपट कर

जफ़ा और सितम का सज़ावार हूं। हक़ीक़त में तेरी गुनहगार हूं॥
अरे क्यों मैं वां तुझ को कहलाया क्यों। न माना मेरा हाय तूने कहा॥
बला में पड़ा आप भी बेखता॥ मुझे भी अखाड़े में रुसुवा किया॥
जो जीते हैं तो फिर भी मिल जायेंगे॥ नहीं तो किये की सज़ा पायेगा॥

कहना राजा इंदर का लालदेव से वास्ते कैद गुलफ़ाम के और निकलवाना सब्ज़परी का अखाड़े से परनोच कर ॥

अरे देव कर क़स्म वेदाद की ॥ पकड़ हाथ इस आदमी ज़ाद का
कुवा वह जो है क़ाफ में पुरख़तर ॥ अभी उसमें जाकर इसे कैद कर
परी सब्ज़ है जो यह आगे खड़ी ॥ ख़ता की है इस वेसवा ने बड़ी ॥
सो तू नोच कर इसके पर और बाल ॥ अखाड़े से मेरे अभी दे निकाल
उड़ाती फिरै ख़ाक ये कूबकू ॥ न आवे हमारे कभी रोबरू ॥

आना सब्ज़परी का जोगन बन के परिस्तान में और आमद गाना लोगों का

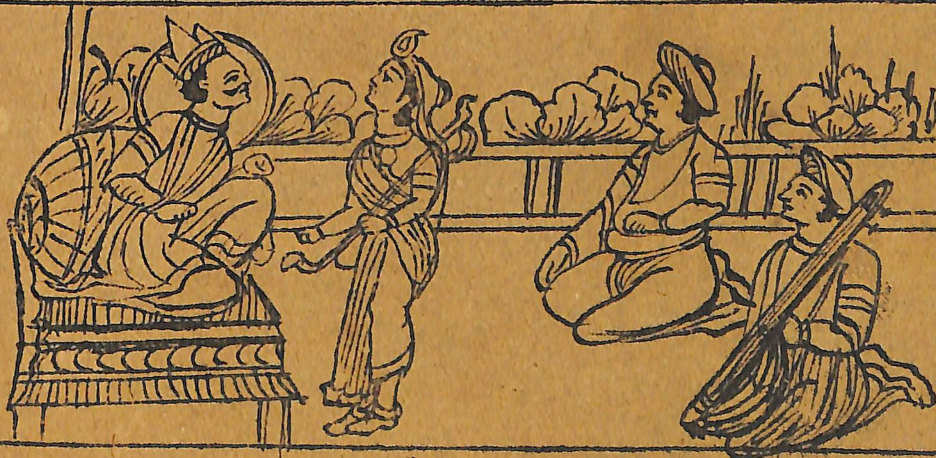

जोगिन आती है परी बन के परिस्तान के बीच ॥ सुमिरनी हाथ में मुंदरे हैं पड़े कान के बीच ॥ सर पै इंडुवा है रखे मुंह पै मली है भभूत सिलियां डाले है गरदन पै गरेवान के बीच ॥ चाल मतवाली है आंखें हैं मये इश्क़ से लाल ॥ मस्त शहज़ादे गुलफ़ाम के है ध्यान के बीच सरको धुनते हैं सदा सुनि के चरिंद और परिंद ॥ भैरवी का अजब अदाज़ है हर तान के बीच ॥ तालिबे बोसा है लबदीद की मुश्ताक़ आरवो दिल है सान में तपा वस्ल के अरमान के बीच ॥ कहीं गु-

ल्फाम का कोसो नहीं मिलता है पता। खाक उड़ाये हुवे फिरती है व याबान के बीच॥ ग़मज़ा आफत है क्या मतहै उदाये उसकी॥ हश्र आलन में बपा करता है इक आन के बीच॥ सज जोड़ में है क्यों चिह्र ये ऐशान की ज़िया॥ सुबह को चादनी ने खेल किया धान के बीच देव मदहोश है पायों नहीं दम उस्ताद॥ जिन तड़पते हैं पड़े जान नहीं जान के बीच॥ १॥

ठुमरी गाना जोगन का परिस्तान में बीच धुनि भैरवी मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां॥ अंग भभूत जोगन बन मलिया छान फिरी सब गलियां॥ मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां॥ जाजान त है उधार नहिं आवत हम महिलों की पलियां रे॥ लट छिटकाय के भेष बना के देश विदेश निकलियां रे॥ अंग भभूत जोगन बन मलियां॥ मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां॥ सीस दकस गयो पांव भुलस गयो धूप में बन २ चलियां॥ तन कुम्हलाय गयो मुख मुरझाय गयो॥ जैसे गुलाब की कलियां। अंग भभूत जोगन बन मलियां॥ छान फिरी सब गलियां॥

मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां रे॥
जग दुश्मन है राह कठिन है। बलायें क्योंकर टलियां रे॥
जाय कहो उस्ताद से गुइयां। छान फिरी सब गलियां रे॥
मैं तो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां रे॥
अंग भभूत जोगन बन मलियां रे॥

ठुमरी दूसरी जबानी योगन के बीच धुनि भैरवी के॥
कहां पाऊं कहां पाऊं यार रे॥

अंतरह:

यार की राह नज़र नहिं आवत ढूंढत हूं संसार रे में॥
कहां पाऊं कहां पाऊं० २

कहां रे करूं कित हेरन जाऊं सोचत हूं बार २ मैं
कहां पाऊं कहां पाऊं ॥
सपने में दिलदार को पाऊं चौंक पड़ी भिनसार रे मैं
कहां पाऊं ॥
पिया कारन उस्ताद सेजा के होउ गले का हार रे मैं
कहां पाऊं ॥

गजल जबानी जोगन के फिराक़ गुल्फाम में ॥

मरता हूं तेरे हिज्र में ऐ यार खबर ले। अब जान से जाता है ये बीमार खबर ले॥ फिरता हूं तसव्वर में तेरे सुबह से ताशाम॥ बेताब है ये है तालिबे दीदार खबर ले॥ बाज़ार वफा गर्म है ऐ यूसुफ़े सानी॥ दिल बेचता है तेरा खरीदार खबर ले॥ ढूंढे से भी अब तेरा ठिकाना नहीं मिलता॥ हूं छान फिरा कूंच औ बाज़ार खबर ले॥ आंखें लगी कोई दम कोई दम महमान है मेरा॥ अब सांस है लेना मुझे दुश्वार खबर ले॥ आंख उसकी हो क्या हाल दिले जान से आगाह॥ किस तरह से बीमार की बीमार खबर ले॥ आंखे लगी हैं दरशा से दिखा शक्ल खुदारा॥ सर फोड़ रहा हूं पसे दीवार खबर ले इतना भी नही चाहिये आशिक़ से न गाफिल॥ सौ बार अगर टाले तो इक बार खबर ले॥ आगाज़ मुहब्बत में नहीं ज़ीस्त की उम्मेद॥ मरता है तेरा ताज गिरफ्तार खबर ले॥ लिल्लाह दिखा शक्ल अब है तिश्ना बिरहमन॥ ऐ बेखबर व वस्ल सुन यार खबर ले। सुनते हैं कि फुरक़त में तड़फता है अमानत॥ जल्द ऐ बुत बे दीन मरा गुफ्फार खबर ले॥

गजल दूसरी ज़बानी जोगन के आलम बेकरारी में बीच धुनि भैरवी के ॥

रूह बदन में है तपां जी की है कल से बेकली॥ जलद खबर लो हम दमों जो फिराक़ में चली॥ बाद सुबा जो सुबह दम बाग़ में नाज़ से चली

नखल निहाल होगये फूल गई कली कली। साये की तरह खल द ढा चेहर साफ़ उड़ गया॥ आया जवाल यार पर हुस्न को दोपहर ढ ली॥ तुम सान शकरो दहन होगा हसीनों को हकन॥ शाख नबा त होते है दात नबात की डली॥ तार कसी दुपट्टा ले खोद जोकि रन टांक कार॥ होशव महिताब में क्या है सनम झूलाझली॥ च लता है बाग में जबकि वह गुलउदा के पांव पीछे॥ खार हर एक फू लको देती है क्या कली कली॥ क़सद किया जो अबर में उस गुल त न तर का॥ सब्ज़े ने किया दूर तक दस्त में फ़र्श मखमली॥ यार सा नाज़नी ने कोई कब है रियाज़े दहर में॥ बोझे से दर्द आर हुवा पहिन जो जोड़ा संदली॥ मैने शबे फिराक़ में की जो एक आह आतिशी ज़िसमें थे सम्मां का फुका कहने लगा जली २॥ आई शराब सा क़िया जामें शराब देपिला॥ फूल खिल फल शजर अबर उठा हवा चली॥ जुल्फ़े दराज़ किता की मुझ से झलक के यार ने॥ जीन छु टी अज़ाब से रोग गया बला टली॥ तेरी भौंह में बल पड़ा क़तल हुवा मैं तेग़ से॥ तेरी उधर पलक हली मुझपर इधर छुरी चली॥ वह के ज़मीन आर में पाउं अमानत अपना किया॥ जब हुई लर ज़िस इक ज़ए जदां से निकला या अली॥

तारीफ़ करना कालदेव का जोगन की राजा इंदर से॥

ख़ुदा राजा को रखे शाद मान। जो हो जान बख़शी तो खोलूं ज़बान॥ परिस्तान में जोगन एक आई है। ललायक़ सब उसकी तमाशाई है॥ वह है नाचती गाती इस आन से। कि जिन सदके होते हैं सौ जान से॥ ग़ज़ब भैरवी की हर एक तान है। ख़ुदाई का दिल में उस कुरबान है॥ मले है भभूत और अफसर्दा धुनी। न देखा है जोगन न ऐसी सुनी॥

मुश्ताक़ होना राजा इंदर का और बुलवाना

जोगन को काले देव से

नका देर ऐ देव बहिरे खुदा। अखाड़े में मेरे उसे जल्द ला ॥
मैं देखूं वह जोगन है किस सान की परी है या क़िस्म इन्सान की॥
किसी देव जिन की सताई न हो ॥ मेरे पास फरयाद लाई न हो ॥
मज़ा राग का नाच का जाक है ॥ फ़क़ीरों से मुझ को बहुत शौक है
न लाये वह कुछ और दिल में ख्याल। दिखाये मुझे आके अपना जमा

सवाल काले देव का जोगन से और ज़ाहिर करना कमाल इश्तियाक़ राजा इंदर का ॥

अरी जोगन अब दिल में हो अपने सार। किया है तुझे राजा इंदर ने
किसी से तेरा सुन लिया है जो हाल। मुलाक़ात का शौक़ उसे है कमाल
मेरा देर करना उसे शौक़ है ॥ तेरे नाच गाने का मुश्ताक़ है ॥
मुराद अब तेरे दिल की बर आयेगी। जो मांगेगी वह चीज़ मिल जायगी
न फिर उमर भर तू करेगी सवाल। वह एक दम में तुझको करदेगा
निहाल॥

जवाब जोगन का तर्फ़ काले देव के तान आमेज़ और लगावट करना बाद उसके ॥

ये बातें न लाना जबां पर कभी। फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल लगी॥
बड़ा वह मेरा देने वाला हुवा ॥ खुशामद से मुंह तेरा काला हुवा॥
फ़क़ीरों को दौलत की परवा नहीं। यहां हर के अफ़ज़ाल से क्या नहीं
जो गाने का राजा तलबगार हो। तो यहां किसको चलने में इंकार हो।
तबियत मुख़ातिब अगर पाऊंगी। जो आता है मुझको सुना आऊंगी

हाज़िर करना काले देव का जोगन को और अर्ज़ करना राजा इंदर से॥

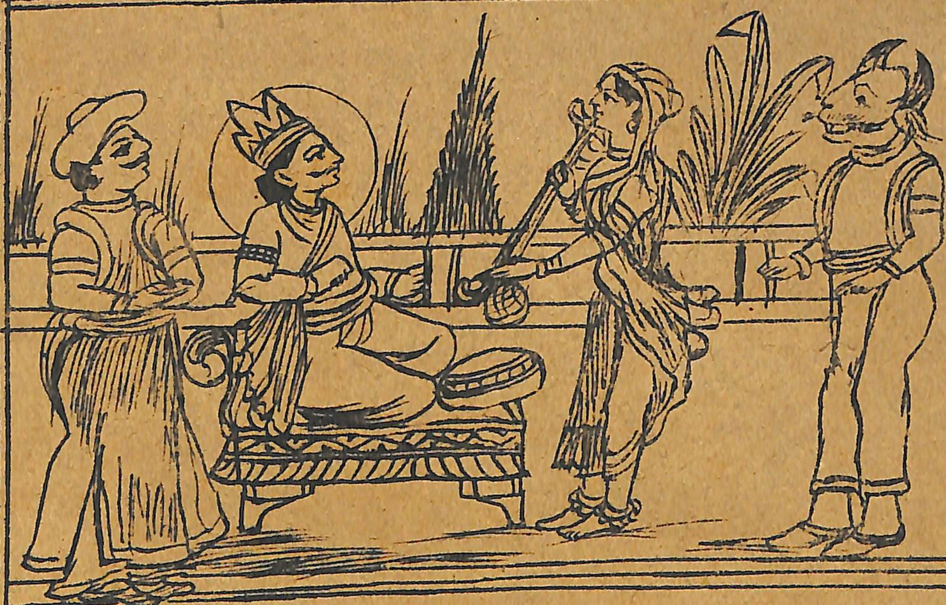

महराराज कीजे इधर अब निगाह जोगन है हाज़िर बहाले तबाह
मिला किस खराबी से इस का निकास। हुवा मैं परिस्ता में हरसू खान
व कुतजल्द खिदमत में आया हूं मैं। अखाड़े में जोगन के आया हूं मैं
अजब खुश गुल है ये जुहराजबी। उड़ाता है जंगल में क्या भैरवी॥
हरएक तान पर लोट जाता है जी। सुना होगा गाना न ऐसा कभी

देखना राजा इंदर का तरफ जोगन के॥

और दरयाफ्त करना हाल जोगन का॥

अरी जोगन ए दर्द की मुबतिला फ़क़ीरों का क्या भेष तूने किया॥
फ़िदा किस पै है किस पै शैदा है तू कोई आदमी है परी या है तू॥
कहां से यहां तेरा आना हुवा॥ कि मुश्ताक़ सारा ज़माना हुवा॥
किसे ढूंढती फिरती है कूबकू॥ उड़ाती है क्यों खाक जंगल की तू॥
सुना अपना गाना मुझे भी ज़रा॥ सुना भैरवी छेड़ या जोगिया॥

जबाब जोगन का दर्द आमेज़ तरफ़ राजा इंदर के अर्ज़ करना॥

महाराज पूछो ने जोगन का हाल। फ़क़ीरों का दिल दर्द से है निहाल

मेरा मुझ से माशूक है छुट गया ॥ मेरा राज इस देश मे लुट गया ॥ यहां ढूंडने इसको आई हूं मैं ॥ बिरेगिन हूं गम की सताई हूं मैं ॥ सुनाती हूं गाना जो मुझ को है याद । अजब क्या जो मिल जाय दिल की मुराद ॥ अगर राग से दिल को हो गैर हाल ॥ न योगिन अब कीजिये गा सवाल ॥ ठुमरी गाना योगन का सामने राजा इंदर के बीच धुनि भैरवी के

कहां गयो गुइयां शाहज़ादा जानी प्यारी दिल तड़पे हमारा ॥
कहां गयो गुइयां शाहज़ादा जानी प्यारा
वाका पता कहीं लागत नहीं। ढूंड फिरी बन सारा ॥
कहां गयो ॥
बिन जानी के इन नैननि में। रैन दिना अंधियारा ॥
कहां गयो ॥
गुइयां मैं जैसे सुर्ख चुनरिया ॥ तड़फन होगी बिचारा ॥
कहां गयो ॥
कीऊ कहै उस्ताद से जाके। तुम्हरी दम का सहारा ॥
कहां गयो ॥

गिलौरी देना राजा इंदर का जोगन को मह जूस होकर और जवाब देना जोगन का ॥

पान लेके क्या करूं किसी सज्ज रंग का ध्यान है ॥ हड्डियां चुना है बद न खान पान है ॥ इश्क पीपी के लोहू रंग लाया है। फिराक ने क़तल का बीड़ा उठाया है ॥ गिलौरी लिये मुझको क्या तकता है। फ़क़ीरों का मुंह कौन कील सक्ता है ॥

होली गाना जोगन का सामने राजा इंदर के बीच धुनि सिंधु भैरवी के ॥

जरिजाय गुइयां ऐसी होरी ॥ बिन सइयां देह सुलगत मोरी ॥
नाथ सुहाग पिया संगभागी ॥ सब चुरिया हैंम तोरी ॥
सुरत सुनारया उड़ाय न सजनी ॥ तनमन आग लगारी ॥

बिन पिया देह सुलगत मोरी

अबीर गुलाल मिलावो रवाक में। कैसी फाग कैसी होरी ॥
आगन के बाच रंग मोरी गागरि। देवो अटक बर जोरी ॥
बिन पिया देह सुलगत मोरी ॥

बिन पिया सुरवपर मारके चपरा खूब गुलाल मलोरी ॥
नैयनन की पिचकारी बनायके। असुवन रंग में बोरी ॥
बिन सैया देह सुलगत मोरी ॥
टग मारीयों टाडी हूं उन बिन। जैसे कीन्हो है चोरी ॥
कामुख लैकै उस्ताद के जाऊं। जिया ने आफत तोरी ॥
बिन सैयां देह सुलगत मोरी ॥

हार देना राजा इंदर का जोगिन को ॥
फिर जवाब देना जोगन का
और हार न लेना ॥

हार जिन हार है वृ़गादलकारवार है। अपना गुलजार गेले का हार
तो बहार है ॥

फिर गज़ल गाना जोगन का बीच धुनि भैरवी के ॥

दिलको चैन इकदम तहे चर्व कहै। मिलता ह ॥ वह मेरा गुल्फाम वह
गुल पै रहन मिलता नहीं ॥ किस तरह सर २ मेरे दिलको उड़ा कर लै
गई ॥ गुलशने आलम में वह रशके चमन मिलता नहीं ॥ बाउली
हूं बहरे उल्फत में जुलेखा की तरह ॥ यूसुफ़े ग़म गस्ता का था
है ज़कन मिलता नहीं। जिंदगी से तंग हूं वे चारा बाग़े दहर में ॥
बेकली है दिलको वह गुंचा दहन मिलता नहीं ॥ जीते जी जिस-

जाम मुबारिक हो वै ॥ बाद मुद्दत कनि मीनों के हिसाबा जामअफर
त एहतमें अब आलम मुबारिक होवे ॥ सब्ज़ कुमरी को मज़ा बार हा
बुलबुल का गुल ॥ हमको ये सर्वे गुल से दाम मुबारिक होवे ॥
पीजुके खून जिगर हिज्र में जी भर भर के ॥ शरबते वस्ल का
अबजाम मुबारिक होवे ॥ तख़्त पर हमको मुबारिक हो जहां
में फिरना ॥ ग़ैर को गरदिशे ऐयाम मुबारिक होवे ॥ हो चुके इश्
क़ में बदनाम बड़ी मुद्दत तक ॥ अब ज़माने में है मैं नाम मुबा
रिक होवे ॥ जालसाज़ों के न फंद में फंसे यैदिल ॥ गेसुओं का है
में अब दाम मुबारिक होवे ॥ हैं जन्नत की मुबारक हो फलक के
तारे ॥ बाग़ का गुल हमें गुल्फाम मुबारक होवे ॥ छीन शाहज़ा
दे का अब राज़ महम को उस्ताद । ये अमानत सहरो शाम मुबा
रिक होवे ॥

तारीख किताब

हुइ इंदर सभा जिसदम मुरत्तब। जहां ने सुनके तौसीफों सना की बुतों ने दी सदा अल्लाह २। हरएक मिसरए है यां कुदरत खुदा की हुवा जो याद जिसको ले उड़ा वह। जबां किस २ ने गाने पर न बाकी किसी ने याद की लिखी किसी ने। किसी ने मुस्तजू लाइन्तिहा की उड़ी शोहरत जब इसकी लखनऊ में। अमानत सबने ख्वाहिस जा बजा की॥ अरूसे वज़्द बोल उहे परीज़ाद। खलायक मैं है धूम इंदर सभा की॥ सन १८८४ ईस्वी मिती चैत वदी १५ रोज ब्रहस्पति

इति

अमानत की इंदरसभा

समाप्त हुई॥

शुभम

लि० रामचरन कापीनवीस

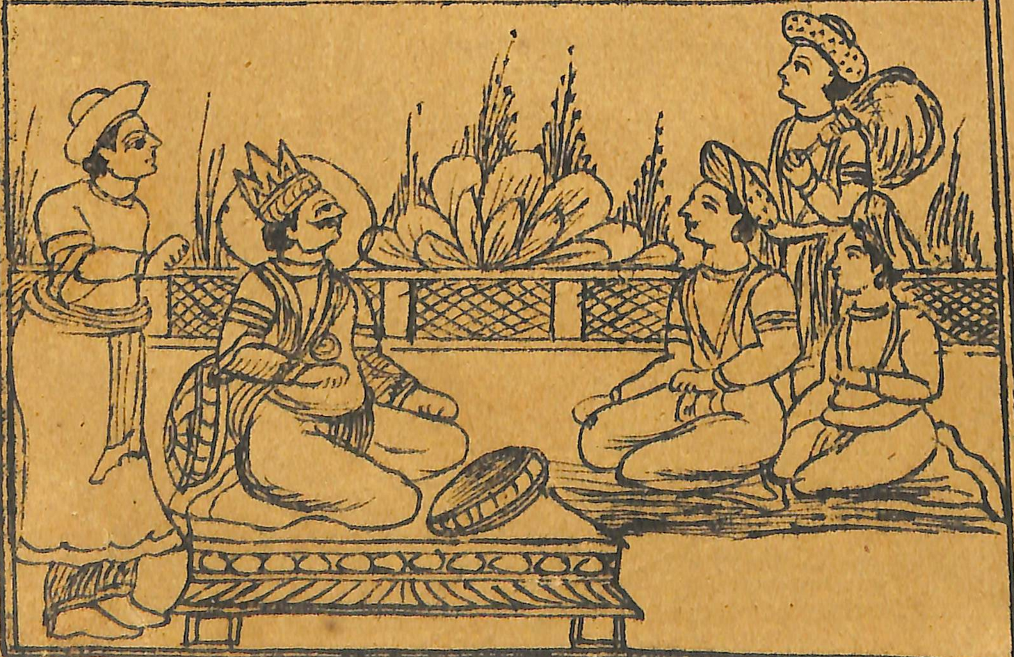

पर मेरे ईसा को तरके लिबास। बाद मुरदन उसके हाथों से कफन मिलता नहीं॥ शाक्ल ताऊसे गुलिस्तां हूं दागदारी॥ गुलबन पर खाये हैं वह गुलबदन मिलता नहीं॥ जिसकी खातर मैं झांकता हूं बहर आलम में कुये॥ वह परी के गुलजमें रंजो महन मिलता नहीं॥ करता हूं कूर सदा कुमरी की तरह सहिरा में॥ पर कहीं वह गैरते सरवे चमन मिलता नहीं॥ ठोकरें खाता हूं जंगल की नहीं खफा रहिता है जी॥ जान पर बन जाये ऐसा कोई बन मिलता नहीं॥ कांटे तलुवों में चुभे हैं जीके अब ढूंढ़ं कहां॥ बरियों में भी मेरा नाज़ुकबदन मिलता नहीं॥ सूरते फेरेहाद मैंने छानमारे सब पहाड़॥ पर कहीं उस्ताद सा शीरी सखुन मिलता नहीं॥

शाली हस्माल देना राजा इंदर को जोगन को खुश होकर फिर जवाब देना जोगन का हमानी में

रूमपल नहीं दीजिये जो तंगदस्त है। फकीर अपनी मस्त कमलीमें हैं मैं। इश्क़ की गरमी ने मारा है ॥ पसमीने से किनारा है॥ राजा के दोर ने पहले पार में आई हूं॥ जोमांगो सो पाऊं॥

इनकार करना राजा इंदर का जोगन से और ग़ज़ल गाना जोगन का बतलब गुल्फाम के ॥

होता है कोई आन में अब काम हमारा ॥ इन आम में देदीजिये गुल्फाम हमारा॥ कब चाह से यूसुफ़ को निकालोगावो हमारा॥ घुटती है अंधेरे में दिले राम हमारा॥ आशिक़ ने तेरे मांगलिया राजा से तुझको॥ दे आये कोई उसको पैग़ाम हमारा॥ आजाय अगर सी छाती से लगा लें॥ सीने से तपा है दिले नाकाम हमारा अब वस्ल के लूटेंगे मज़े खलक़ में बेख़ौफ़॥ आगाज़ से बिहतर उवा अंजाम हमारा॥ मंगवाइये शहज़ादे को अब देर न काज॥ नाम आपका हो खलक़ में औ काम हमारा॥ अल्लाह मददगार है हर हाल में उस्ताद। करम की है क्या गरदिशे ऐयाम हमारा॥

पहचानना राजा इंदर का सब्ज़ परी को और तलब करना लालदेव का वास्ते खलासी गुल्फाम के॥

ओरे लालदेव इस तरफ जल्द आ। बडा जोगन ने मुझको धोखा दि। बनावट की थी सारी कारीगरी॥ नहीं आदमी सब्ज़ ये है परी ॥ इसे ज़र की ख्वाहिस न यहां लाई थी। उड़ाने गिरफ़्तार को आई थी कभी उसको मिलता न वह गुलउज़ार मगर ग़ौल हारा हूं मैं लौनिकार॥ निकाल अब कुये से तू गुलफ़ाम को हवाले कर इस नेक अंजामके

मिलना गुल्फाम का सब्ज़परी को और गुल्फो सुनीद हाल ऐयाम फिराक़ के माबैन आशिक व माशूक के॥

सवाल सब्ज़ परी का ॥

कहा था हिज्र के यामन था जुदाई तेरी॥ मेरे खालिक़ ने मुझे शक्ल दिखाई तेरी॥

जवाब शाहज़ादे का

खाक है मुंह पै मली बाल हैं सिर के बिखरे॥ हाय इस इश्क़ ने क्या शक्ल बनाई तेरी॥

सब्ज़ परी का

मुझ पै होना था होगया इसका नहीं ग़म। होगई क़ैद मुसीबत मे रिहाई तेरी॥

शाहज़ादा

तू मेरे आगे निकाली गई थी नीचे के पर। राजा तक फिर उड़ई किसतरह से रसाई तेरी॥

सब्ज़परी

बन के जोगिन हुई इन्द्र की सभा में दाखिल। फिर मुझे चाहपहांखी
च के लाई तेरी॥ जवाब शहज़ादे का॥
कहि दे राजा से मुझे किसने तुझे दिलवाया। दुश्मन जां थी मेरी जान
जुदाई तेरी॥ जवाब सब्ज़ परी का॥
गाके और नाचके राजा को रिझाई मैंने॥ तब मुलाक़ात मयस्सर मु
झे आई तेरी॥ जवाब शाहज़ादे का॥
जर की तालिब न हुई मुझे मिर्या राजा से। अब शर्फ़ लेगई शाही पै
गदाई तेरी॥ जवाब सब्ज़ परी का॥
देव कम्बख्त ने इस ज़ोर से पहुंचा पकड़ा॥ होगई लाल नज़ा
कत से कलाई तेरी॥ जवाब शाहज़ादे का॥
मेरी जोइश्क़ में सारा तेरा जोबन लूटा॥ आधी सूरत व खुदा मैंने
न पाई तेरी॥ जवाब सब्ज़ परी का॥
कैद ने कर दिया बीमार से बदतर मुझ को। घर में ले चलके करूं
गी मैं दवाई तेरी॥ जवाब शाहज़ादे का॥
पिंडलियां सूजी हैं तलवों में चुभे हैं कांटे। प्यार देता है मुझे बरहि
ना पाई तेरी॥ जवाब सब्ज़ परी का॥
मुझको ईज़ा हुई पापोश के सदक़े से हुई॥ जान अल्लाह ने गुल्फ़ा
म बचाई तेरी॥ जवाब शाहज़ादे का॥
मैं तेरे हाथ लगा तू मेरे फंदे में फ़ंसी। मेरा मतलब हुवा उम्मेदवा
र आई तेरी॥ जवाब सब्ज़ परी का॥
हैं दुआयें मेरे दिल में किस अबह शार तलक। फ़ज़्त उस्ताद से देखो
न जुदाई तेरी॥ मुबारक बाद॥

गाना सब्ज़ परी का गुल्फ़ाम से हम बग़ल हो कर साथ सब परियों के॥

प्रगादिये जब लब ये गुल्फ़ाम मुबारिक होवे॥ ऐशा व अशरत का सद